आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 5/अंक 2/जून 2025
Received: 16/06/2025; Accepted: 20/06/2025; Published: 28/06/2025

आदिवासी क्रांति की पहली चिंगारी: तिलका मांझी की वीरगाथा

[1]अनुरूपी लेखक - डॉ. मनीषा रात्रे
पूर्व शोधार्थी (इतिहास)
डॉ. सी.व्ही. रमन विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)
ईमेल: manisharatre2020@gmail.com,

[2]सह लेखक - डॉ. श्रुतिदेव गावस्कर
सहायक प्राध्यापक (इतिहास)
नवीन शासकीय महाविद्यालय बेलतरा, जिला-बिलासपुर (छ.ग.)
ईमेल: shrutidev0609@gmail.com

[1]अनुरूपी लेखक - डॉ. मनीषा रात्रे, [2]सह लेखक - डॉ. श्रुतिदेव गावस्कर, आदिवासी क्रांति की पहली चिंगारी: तिलका मांझी की वीरगाथा, आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 5/अंक 2/जून 2025**, (100-105)
https://doi.org/10.5281/zenodo.15767887

[1]अनुरूपी लेखक - डॉ. मनीषा रात्रे - पूर्व शोधार्थी, डॉ. सी.व्ही. रमन विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)। **[2]सह लेखक - डॉ. श्रुतिदेव गावस्कर -** सहायक प्राध्यापक, नवीन शासकीय महाविद्यालय बेलतरा, जिला-बिलासपुर (छ.ग.)।

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

सारांश

तिलका मांझी एक आदिवासी योद्धा थे जिन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध प्रथम जन विद्रोह का नेतृत्व किया। तिलका मांझी भारत देश के सर्व प्रथम स्वतंत्रता सेनानी थे जिसे हमारी इतिहास की किताबें भूल गई हैं। तिलका मांझी

पहाड़िया या संथाल आदिवासी थे। किन्तु उस समय के ब्रिटिश अभिलेखों में जबरा पहाड़िया के नाम से उल्लेख मिलता है। तिलका मांझी एक निडर क्रांतिकारी नेता थे इन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ पहले जन आंदोलन का नेतृत्व किया। अपने इसी कार्य से भारत के झारखण्ड में लोकतंत्र और स्वदेशिता को पुनः प्राप्त किया। तिलका मांझी उर्फ जबरा पहाड़िया इन्होंने राजमहल झारखण्ड की पहाड़ियों पर ब्रिटिश हुकुमत से लोहा लिया इनमें से सबसे लोकप्रिय नाम तिलका मांझी का हैं।

मुख्य शब्द: आदिवासी, क्रांतिकारी, विद्रोह, आंदोलन, ब्रिटिश शासन, पहाड़िया।

प्रस्तावना

तिलका मांझी वर्तमान झारखण्ड और बिहार के एक उल्लेखनीय आदिवासी नेता और क्रांतिकारी महानायक थे। तिलका मांझी को भारत देश में ब्रिटिश शासन के अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष करने वाले आरंभिक नेताओं में से एक माना जाता है। सन् 1771 से लेकर सन् 1785 तक अपने अधिकार व कब्जे के लिए विद्रोह किया और अपने मृत्यु तक युद्ध का नेतृत्व किया। तिलका मांसी ने ईस्ट इंडिया कंपनी तथा इनके सहयोगी जमीदारों तथा रियासतों के शोषणकारी प्रथाओं के विरोध में जनजातीय समुदायों को संगठित किया। इस विद्रोह को भारत का ब्रिटिश सरकार के विरोध में सर्वप्रथम जन आंदोलन माना जाता है] इसके बाद के जो आदिवासी विद्रोह हुए जैसे 1855 से 1856 के संथाल हुल तथा अन्य स्थानीय प्रतिरोध आंदोलनों के लिए एक अलग स्थान बना लिया। उन्होंने आदिवासी भूमि के हड़पने के खिलाफ तथा जंगलो के विनाश के लिए लड़ाई लड़ी।

जीवन परिचय

भारत में ब्रिटिश हुकुमत को चुनौती देने वाले सर्वप्रथम पहाड़ियाँ समुदाय के वीर आदिवासी योद्धा तिलका मांझी थे, जिसे जबरा पहाड़िया के नाम से भी जाना जाता है। तिलका मांसी को सिंगारसी पहाड़ और पाकुड़ के जबरा पहाड़िया के बारे में कहा जाता है कि इनका जन्म 11 फरवरी सन् 1750 ई. में तिलकपुर नामक एक छोटे से गांव में एक संथाल परिवार में हुआ था। यह गांव वर्तमान में बिहार के सुल्तानगंज में स्थित है।

इन्होंने अपने बचपन में ही तीरंदाजी से जंगली जानवरों का शिकार करना, ऊँचे-ऊँचे पेड़ पर चढ़ना, बाढ़ आए नदियों को पार कर लेना आदि में महारत हासिल कर लिया था। तिलका नाम का अर्थ पहाड़िया भाषा में 'गुस्से वाली' लाल आंखो वाला व्यक्ति है। जो इनके अधिक उग्र स्वभाव के कारण दिया गया था। एक गाँव के मुखिया के रूप में उन्होने "मांझी" की उपाधि धारण की जो संथाल और पहाड़िया इन दोनो समुदायो में एक नेता का प्रतीक है। तिलका मांझी ने संथाल और पहाडिया समुदाय का नेतृत्व करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उनके पिता का नाम सुंदर मुर्म था इन्हे मांझी बाबा के रूप में सम्मानित किया जाता था। सन् 1784 में तिलका मांझी ने अंग्रेजी सेना के विरोध में हथियार उठा लिए और उन्होंने आदिवासियों मुख्य रूप से संथाल आदिवासी

समुदाय के जवानो को संगठित कर एक सशस्त्र समुह बनाया और अंग्रेजो के द्वारा आदिवासियो के संसाधनो पर कब्जे के तथा शोषण के खिलाक लड़ सके।

सन् 1771 से 1784 तक तिलका मांझी ने ब्रिटिश औपनिवेशिक सत्ता के खिलाफ लंबी तथा कभी न आत्मसमर्पण करने वाली लड़ाई लड़ी इस विद्रोह से वहाँ के जो स्थानीय महाजनों-सामंतो तथा अंग्रेजी शासक की शांति भंग हो गई। भारत के आदिवासी विद्रोहियो में सिंगारसी पहाड़ निवासी जबरा पहाड़िया और अमडापाड़ा प्रखण्ड के आम-गाछी पहाड़ निवासी करिया पुजहर तथा पहाड़िया लड़को में सरदार रमना अहाड़ी आदि विद्रोही थे। आदिवासी विद्रोही रोम के पुरखा आदिवासी बहाका स्मार्टाकस को दुनिया का पहला माना जाता है। भारत के ब्रिटिश औपनिवेशिक युद्धों के इतिहास में प्रथम आदिवासी विद्रोह का आदिवासी समुदाय के पहाड़िया आदिम लड़को को जाता है जिन्होंने झारखण्ड की पहाड़ियों पर ब्रिटिश हुकुमत से लोहा लिया। तिलका मांझी इन सभी पहाड़ी लड़ाको में सबसे अधिक लोकप्रिय आदिवासी विद्रोही महानायक जबरा या जौराह पहाड़िया को कहा जाता है। सन् 1778 ई. में तिलका मांझी ने रामगढ़ कैम्प पर कब्जा करने वाले अंग्रेजो को पहाड़िया सरदारो की मदद से कैम्प से भगा दिया और उस कैम्प को अंग्रेजो के अधीन से आजाद करा लिया। जबरा ने क्लीवलैण्ड को सन् 1784 में मार डाला। इसके पश्चात जबरा की गुरिल्ला सेना पर आपरकूट के नेतृत्व में बहुत भयंकर हमला हुआ जिसमें अनेक लड़के मारे गए और मांझी को गिरफ्तार कर लिया गया किवदंतियों से पता चलता है कि गिरफ्तारी के बाद जबरा को चार घोड़ो में बांधकर घसीटते हुए भागलपुर लाया गया परंतु कई मिलों तक घसीटे जाने के बाद भी वह लड़का पहाड़िया जीवित था। खून से लतपथ जबरा का शरीर भड़क रही थी और उसकी लाल-लाल आँखे ब्रिटिश हुकुमत को डरा रही थी। डर से काँपते हुए अंग्रेजो ने तिलका मांझी को भागलपुर के बीच में स्थित एक बड़ा बरगद के पेड़ में खुलेआम फांसी पर चढ़ा कर उसकी जान ले ली। उस चौराहा में सरेआम हजारो लोगो के बीच में जबरा उर्फ तिलका मांसी हंसते-हंसते फांसी पर चढ़ गए। फांसी देने की तारिख लगभग 13 जनवरी 1785 को माना जाता है, अंततरू बाद में स्वतंत्रता के लिए हजारो लड़को ने तिलका मांझी का अनुसरण किया और जब भी किसी लड़का को फांसी दी जाती थी तो वो एक गीत गाया करते थे-हाँसी-हाँसी चड़बो फॉसी। यह गीत आज भी हमें इस आदिवासी विद्रोहियों की याद दिलाती है।

जबरा पहाड़िया समुदाय एक ऐसी किवदंती है। यह गुरिल्ला लड़का जिसके बारे में किसी भी प्रकार का कोई ऐतिहासिक दस्तावेज सिर्फ नाम मात्र का उल्लेख मिलता है। संपूर्ण विवरण नहीं देते। लेकिन यही पर जो पहाड़िया समुदाय के जो परंपरागीत है और कहानियों में इसकी जो युद्ध करने की छापामार जीवनी तथा इनकी कहानियां कई वर्षों बाद भी उसके आदिवासी विद्रोही होने का आकाट्य साक्ष्य पेश करती हैं।

आदिवासी नेता

अंग्रेजों के खिलाफ पहला सैनिक बिद्रोह सन् 1784 में हुआ। यही प्रथम विद्रोह संथाल विद्रोह की प्रारंभ थी। यह विद्रोह सन् 1770 में पड़े भयंकर अकाल और इसी के साथ विलियम पिट द यंगर से 'प्रभावित कोर्ट आफ

डायरेक्टर्स' के आदेश जारी किया कि जमींदारी बंदोबस्त को दस वर्ष के लिए निर्देश दे दिया इसी आदेश के परिणामस्वरूप यह विद्रोह होना तय हो गया। इस आदेश के बाद वहाँ के स्थानीय संथाल ग्रामीणों और जमीदारों के बीच आपसी बातचीत करने के लिए कम समय मिला। इसी बीच बाबा तिलका मांझी ने राजमहल और ब्रिटिश कमिश्नर लेफ्टिनेंट ऑगस्टस क्लीलैण्ड पर गुलेल से हमला करना प्रारंभ कर दिया। इस हमले के बाद अंग्रेजी सेना ने तिलकपुर के जंगल को चारों तरफ से घेर लिया जहाँ से तिलका मांझी काम किया करते थे। हांलाकि उन्होंने और उनके लड़कों ने अंग्रेजी सेना को कई हफ्तों तक रोके रखा। तब वे अंत में पकड़े गए, पकड़े जाने के बाद अंग्रेजी सेना ने उन्हे घोड़े से बांधकर बिहार के भागलपुर में कलेक्टर के निवास पर ले जाया गया।

जबरा पहाड़िया विवाद उर्फ तिलका मांझी -

तिलका मांझी पहाड़िया थे या संथाल इस बात को लेकर आज भी विवाद है। अनेक लेखकों ने उन्हें संथाल आदिवासी बताया है क्योंकि तिलका मांझी को मुर्मू टोटेम समुदाय का बताते है। तिलका मांझी के पिता का नाम सुंदरा मुर्मू और उनके माता का नाम पानो मूर्मू था। तिलकपुर गांव के ग्राम मुखिया तिलका मांझी के पिता सुंदर्रा मुर्मू उर्फ आटु मांझी थे तथा तिलका मांझी के माता पानो मुर्मू एक गृहणी महिला थी। इनके माता और पिता से यह स्पष्ट पता चलता है कि तिलका मांझी संथाल परिवार में जन्मे एक संथाल आदिवासी समुदाय के थे।

तिलका मांझी संथाल और वहाँ के पहाडिया जनजाति के बीच में रहकर बचपन से जवानी तक गुजारा है। जो बिहार के सुल्तानगंज क्षेत्र तथा भागलपुर क्षेत्र में पहाड़िया समुदाय के लोगों का निवास स्थान था। इसीलिए बहुत से कुछ गैर इतिहासकारों को यह लगता है कि तिलका मांझी] पहाड़िया जनजाति के थे। किन्तु यहीं पर संथालो का किसी प्रकार का कोई लिखित इतिहास नहीं है लेकिन संथालो को याद है कि उनका बिता हुआ इतिहास कितना पुराना है। जबरा पहाडिया संथाल समुदाय के लिए ब्रिटिश सरकार से विद्रोह करने के मामले में कभी पीछे नहीं हटे है] हमेशा आगे खड़े रहे। आदिवासी समुदाय और संथाल समुदाय में इतिहासकारों की कमी थी इसके परिणाम स्वरूप दूसरे जाति समुदाय के इतिहासकारों के द्वारा जो संथाल समुदाय के इतिहास है उसको तोड़-मरोड़ कर पेश किया जा रहा है। ऐसे तो जो हमारे इतिहास है उसके साथ छेड़छाड़ किया जा रहा है और तिलका मांझी को कुछ इतिहासकारो के द्वारा पहाड़िया जनजाति के साथ जोड़ा जा रहा है। जो सही जानकारी नहीं है। संथालो का सरनेम मुर्मू और मांझी होता है, सुंदरा। पानो और तिलका नाम आज भी संथालो के मध्य मौजूद है। तिलका मांझी का असली नाम तिलका मुर्मू है, जबरा पहाड़िया नहीं। तिलका मांझी का संथाल समुदाय के लोगो के द्वारा पूजा किया जाता है और इनके बीच में इनका नाम अधिक लोकप्रिय है, परंतु यहाँ पर यह भी देखने को मिलता है कि जो पहाड़िया जनजाति के लोग है उनके द्वारा तिलका मांझी का पुजा पाठ या किसी अन्य किसी प्रकार के उनके नाम पर समारोह नहीं देखने को मिलता है। तिलका मांझी का नाम संथालो के विभिन्न लोकगीतो में उनका उल्लेख मिलता है। हमारी भारत देश की इतिहास की बात करे तो यह

देखने को सदैव मिलेगा कि पैसे वालो या उच्च जाति के लोगो के आगे छोटे जाति या गरीब जनता हमेशा झुकती आयी हैं।

प्रारंभ में संथालो का कोई स्थायी निवास नही था] स्थायी निवास नहीं होने के कारण संथाल समुदाय को दूसरे जाति के लोगो के माध्यम से कई स्थानों से भगाया जाता रहा है। झारखण्ड प्रदेश में सबसे पहले गिरिडीह जिला क्षेत्र में संथाल समुदाय ने प्रवेश किया] संथालो की जनसंख्या धीरे-धीरे बढ़ने लगी और इनका क्षेत्रफल भी बढ़ने लगा। हमारे ऐतिहासिक दस्तावेजों से यह पता चलता है कि संथाल आदिवासी समुदाय के लोग सन् 1770 के आये अकाल के कारण 1790 के बाद संथाल परगना की तरफ आये और वहीं बस गए। परंतु जो संथाल का इतिहास है उसके आधार पर संथाल सर्वप्रथम वर्तमान झारखण्ड प्रदेश के उत्तर-पूर्व क्षेत्र तथा वर्तमान बिहार राज्य के दक्षिण क्षेत्र में निवास करते थे। भारत में अंग्रेजी शासन आने से पहले संथाल अपने आपको होड़ कहते थे] इसके बाद संथालो के लिए सांवता शब्द का प्रयोग अंग्रेजो के समय में आया। संथाल शब्द का अर्थ है सांवता। सांवता शब्द का अर्थ होता है साथ-साथ रहना। अंग्रेजो के द्वारा जब संथालों को होड़ से संथाल में परिवर्तन किया गया तथा अंग्रेजो ने अपना दस्तावेज में लिखना प्रारंभ किया तब के बाद एसे आज तक संथालो का इतिहास देखने को मिलता है।

तिलका मांझी साहित्य में :सुप्रसिद्ध लेखिका महाश्वेता देवी जो बांग्लादेश की लेखिका हैं। इन्होने तिलका मांझी के जीवन और विद्रोह पर बांग्ला भाषा में एक उपन्यास "शालगिरर डाके" की रचना की है। महाश्वेता देवी ने अपने उपन्यास के माध्यम से तिलका मांझी को मूर्म गोत्र का संताल आदिवासी समुदाय का नेता बताया है। इस उपन्यास का हिन्दी में "शालगिरह की पुकार" नाम से अनुवाद तथा प्रकाशित हुआ है। राकेश कुमार सिंह है जो हिन्दी के एक उपन्यासकार है इन्होंने अपने उपन्यास "फूल पहाड़िया" में तिलका मांसी को जबारा पहाड़िया के रूप में चिन्तित किया है। यह उपन्यास 2012 में प्रकाशित हुआ था। भारत के आजादी के बाद जिस जगह पर तिलका मांझी को फांसी दी गई थी] वहाँ पर उनकी एक विशाल प्रतिमा की स्थापना किया गया है। भागलपुर के एसपी के जो नजदीकी आवास का नाम तिलका मांझी के नाम पर रखा गया है। भागलपुर विश्वविद्यालय का नाम बदलकर तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय रखा गया है।

निष्कर्ष: भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रथम शहीद तिलका मांझी को माना जाता है। तिलका मांझी पहले कांतिकारी नेता थे जिन्होंने भारत को ब्रिटिश हुकुमत की गुलामी से मुक्त कराने के लिए अंग्रेजो के खिलाफ युद्ध किया। सन् 1785 में तिलका मांझी को बरगद के पेड़ पर फाँसी देकर मार दिया गया। उनके बलिदान और संघर्ष ने यह सिद्ध कर दिया कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम केवल 1857 नहीं] बल्कि उससे कई दशक से ही प्रारंभ हो गया था। तिलका मांझी की याद में भागलपुर के कचहरी में उनकी एक मूर्ति स्थापित की गई है।

तिलका को हमेशा भारत माता के सपूत के रूप में याद किया जाएगा तथा उनका संघर्ष] बलिदान और साहस का भारतीय इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में दर्ज हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. त्यौहार अमृत "तिलका मांझी" अमृत महोत्सव।
2. वांगचुक रिनचेन नोरबू (2021), "कैसे एक निडर आदिवासी ने अंग्रेजों के खिलाफ भारत के पहले जन विद्रोह का नेतृत्व किया", बेहतर भारत।
3. जॉर्ज] गोल्डी एम. (2020) "तिलका मांझीः आदिवासी योद्धा जिन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ पहला जन विद्रोह का नेतृत्व किया", फॉरवर्ड प्रेस।
4. ए बी अनुराग] आकाश (2020), "तिलका मांझीः एक आदिवासी नायक जिसे हमारी इतिहास की किताबें भूल गईं] पीपल का पेड़
5. ए बी "तिलका मांझीः भारत के पहले और भूले हुए स्वतंत्रता सेनानी", मद्रास कूरियर] 7 मार्च 2018, 11 अक्टूबर 2019 को लिया गया।
6. बसु] इप्शिता (2024), भारत के झारखंड में स्वदेशीता और लोकतंत्र को पुनः प्राप्त करना, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, आईएसबीएन 978-0-19-888467-5.
7. बसु] इप्शिता (2024), भारत के झारखंड में स्वदेशीता और लोकतंत्र को पुनः प्राप्त करना] ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस] आईएसबीएन 978-0-19-888467-5.
8. श्रीकृष्ण 'सरला' (1999), भारतीय क्रांतिकारी 1757-1961 (खंड-1) एक व्यापक अध्ययन] 1757-1961, प्रभात प्रकाशन. पीपी. 156-157. आईएसबीएन 978-81-87100-16-4.
9. "तिलका माझीः पुरानी दुनिया का योद्धा", आदिवासी जीवन मायने रखता है] 11 फरवरी 2022, 15 जून 2024 को लिया गया।
10. "तिलका मांझी की जीवनी (1750-1785)", इंडिया स्टडी चौनल] 7 अक्टूबर 2014, 11 अक्टूबर 2019 को लिया गया ।
11. नेपथ्य का नायक - तिलका मांझी] राकेश बिहारी
12. जंगलतरी में तिलका मांझी का विद्रोह (1783-84)

****